व्यञ्जना के भेद — व्यञ्जना के दो भेद हैं - शाब्दी व्यञ्जना और आर्थी व्यञ्जना।

① शाब्दी व्यञ्जना - जहाँ शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है और वह शब्द हटा देने पर व्यंग्य समाप्त हो जाता है, इसे शाब्दी व्यञ्जना कहते हैं।

② आर्थी व्यञ्जना - जब व्यञ्जना किसी शब्द विशेष पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित होती है तो वह आर्थी व्यञ्जना कहलाती है।

शाब्दी व्यञ्जना के भी दो भेद हैं - ① अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना ② लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना, - ~~अभिधामूला~~ 'अभिधा लक्षणामूला शब्दस्य व्यञ्जना द्विधा' (विश्वनाथ)

① अभिधामूला व्यञ्जना के संबंध में 'विश्वनाथ' कहते हैं -

'अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते।
एकत्रार्थेऽन्यधीहेतुर्व्यञ्जना साऽभिधाऽऽश्रया॥'

अर्थात् संयोगादि के द्वारा अनेकार्थक शब्द के एक ही अर्थ में नियंत्रित हो जाने पर भी एक दूसरा अर्थ जिस शक्ति के द्वारा भासित होता है, उसे अभिधामूला व्यञ्जना कहते हैं।

भर्तृहरि ने 'संयोगादि' को इस प्रकार स्पष्ट किया है - 'संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता।
अर्थः प्रकरणं लिङ्गं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः॥
सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः।
शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृति हेतवः॥'

अर्थात् संयोग, विप्रयोग, साहचर्य,

विरोधिता, अर्थ, प्रकरण, लिंग, दूसरे शब्द की सन्निधि, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति तथा स्वरादि। ये सब अनेकार्थक शब्दों के अर्थ निश्चय में अर्थात उसके विशेष अर्थ का बोध कराने में सहायक होते हैं। यथा - संयोग - सशंखचक्रो हरिः' - यहाँ पर 'हरि' शब्द के अनेक अर्थ होने पर भी, 'शंख' और 'चक्र' के संयोग के कारण 'विष्णु' रूप अर्थ निश्चित होता है।

(2) विप्रयोग - 'फणहीनो नागः' - 'नाग' शब्द कोष में 'हाथी' तथा 'सर्प' दोनों के लिए आया है, किन्तु उपर्युक्त वाक्य में 'फणहीन' होने का संदर्भ इसे 'सर्प' अर्थ निश्चित करने में सहायक होता है। इस प्रकार किसी का वियोग भी अर्थ निर्धारण का कारण है।

(3) साहचर्य - 'रामलक्ष्मणौ' - 'राम' शब्द के प्रसिद्ध तीन अर्थ हैं - (a) दाशरथि राम (b) परशुराम और (c) बलराम, किन्तु लक्ष्मण के साहचर्य से यह इसका अर्थ "दाशरथि राम" ही है।

(4) विरोधिता - रामार्जुनौ। पाण्डव अर्जुन या सहस्त्रार्जुन तथा तीन रामों में से कौन राम? यहाँ विरोधभाव से परस्पर विरोधी 'परशुराम' तथा 'सहस्त्रार्जुन' की ही अवधारणा बनती है।

(5) अर्थ या प्रयोजन - 'स्थाणुं भज भवच्छिदे' इस वाक्य में प्रयोजन बतलानेवाले पद 'भवच्छिदे' के होने से 'स्थाणु' शब्द का अर्थ 'शिव' ग्रहण किया जाता है। जबकि कोष में इसके दो अर्थ हैं - 'शिव' तथा 'शुष्ककाष्ठ'। इसका कारण है - प्रयोजन का उल्लेख, क्योंकि भवरोग को नष्ट करने का प्रयोजन शिव ही पूरा कर सकते हैं।

Uma Gaikwad
Skt. Deptt.
B.A III Contd.

Scanned with CamScanner